19 FRIDAY JANUARY
Week 03 019-346

MIC I Sem I

Justice :- न्याय :→

न्याय :→ न्याय शब्द का संबंध केवल राजनीति से न होकर धर्म व दर्शन शास्त्र से भी है। भारतीय चिंतन में 'न्याय' को 'धर्म' का पर्यायवाची माना गया है। प्लेटो के अनुसार न्याय की स्थापना तब होती है जब समाज के विभिन्न वर्ग - शासक वर्ग, सैनिक वर्ग तथा श्रमजीवी - अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करते हैं। वास्तव में सामाजिक संबंधों में संतुलन और सामंजस्य बनाए रखने के लिए ही न्याय की आवश्यकता होती है। उदारवादी, मार्क्सवादी, आदर्शवादी और सुधारवादी, ये सभी विचारक पृथक-पृथक ढंग से न्याय की व्याख्या करते हैं।

न्याय की परिभाषा :→ न्याय एक अत्यंत जटिल अवधारणा है। उसका कानूनी स्थिति, राजनीति, समाजनीति और अर्थनीति, इन चारों का बोध होता है। इसके अतिरिक्त, नैतिकता व सदाचार संबंधी सिद्धांत भी इसके अंतर्गत आ जाते हैं। इसलिए न्याय की परिभाषा करना सरल नहीं है। यह शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Jus' से बना है जिसका अर्थ है - बांधना या बंधन। इसका आशय यह है कि जस्टिस उस व्यवस्था का नाम है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से संबद्ध है। 'समाज' सामाजिक बंधनों का ही एक दूसरा नाम है। समाज में बच्चे हैं, माता-पिता हैं, विद्यार्थी हैं, शिक्षक हैं, कर्मचारी हैं, मालिक हैं, कृषक हैं, मजदूर हैं और साधारण नागरिक हैं। इन सबके अपने-अपने अधिकार हैं और दूसरे के प्रति उनके कुछ कर्तव्य भी हैं। 'न्याय' का तकाजा है कि यह सभी अपनी-अपनी भूमिकाओं को निभाते, समाज में जितने मनुष्य रहते हैं उनमें से प्रत्येक को उसका उचित अधिकार व स्थान दिलाने वाली व्यवस्था को ही न्यायपूर्ण व्यवस्था माना जाता है। आधुनिक विद्वानों द्वारा न्याय की जो परिभाषाएं दी गई हैं, वो निम्नलिखित हैं :→

2018

रॉबर्ट टकर के अनुसार :→ न्याय का अर्थ है कि जब दो पक्षों या दो सिद्धांतों के बीच संघर्ष होता है उसका समाधान इस तरह से किया जाए कि किसी भी पक्ष के उचित अधिकार का हनन न हो।

बैन तथा पीटर्स :→ "न्यायपूर्वक कार्य करने का अर्थ यह है कि जब तक भेदभाव किए जाने का कोई उचित कारण न हो, तब तक सभी व्यक्तियों से एक-सा व्यवहार किया जाए।"

मेरियम के अनुसार :→ प्रथम, न्याय का संबंध मान्यताओं और विचारों से है, समय और परिस्थितियों के अनुसार न्याय की अवधारणा में भी परिवर्तन हुए हैं। जिस युग में दास प्रथा को उचित माना जाता था, उन दिनों दास का क्रय-विक्रय पूर्णतया एक न्याय-संगत व्यवस्था थी किन्तु आज वह न्याय-संगत नहीं है।

द्वितीय :- न्याय का संबंध प्रक्रियाओं से भी है।"

तृतीय :- "प्रत्येक मनुष्य को वे अधिकार व सुविधाएं जुटाई जाती हैं जिन्हें समाज उचित मानता हो।"

न्याय का स्वरूप अथवा विशेषताएं :→

(i) मानवीय व्यवहार के संदर्भ में ही न्याय का प्रश्न उठता है।
(ii) न्याय की कसौटी है - 'निष्पक्षता'।
(iii) न्याय का अर्थ यह नहीं है कि किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं।
(iv) 'न्याय' व 'स्वतंत्रता' का आपस में गहरा संबंध है।
(v) न्याय का समानता से संबंध है।
(vi) बन्धुत्व अथवा भाईचारा।
(vii) प्रकृति की अनिवार्यताओं के प्रति सम्मान
(viii) न्याय का संबंध सुनीति से है।